प्रतिक्रिया

मुझे आपके फिर से इकट्ठा करने दे,
और हम पहचान की अंत तक आ रहें हैं।

और मैंने सोचा की जैसे ही हम इसे पूरा करें में कुछ
कोशिश करूँ और सब कुछ जो हम

पिछले कुछ सप्ताह से सीख है उसे याद कराऊँ,
और आप में से कुछ को

यह मौका दूँ की वह व्यक्तिगत
रीति से प्रतिसाद दे उसे जिसे हम

पिछले कुछ सप्ताहों से सीख रहें हैं।

आपको शायद याद होगा की हमने दो बड़े
प्रश्नों को पूछक सुरूवात कीः

परमेश्वर कौन है, और हम कौन है?
और हमने कहा की जैसे ही हम

यीशु की पहचान और मिशन को दखेंगे,
यह की जैसे ही हम यीशु के बारे में वह कौन था

और यीशु ने क्या जानेंगे, तब हमारी बहुत सी दुविधा
परमेश्वर कौन है और हम कौन है के बारे में

गायब हो जाएगी। अब, मैं आशा करता हूँ,
आपने यह महसूस किया है

की पिछले कुछ सप्ताह से अधिक,
परंतु मुझे उन चीज़ों में से कुछ जो हमने सीखीं है

आपको याद दिलाने की कोशिश करने दें।
परमेश्वर कौन है?

अच्छा, जैसे ही हम यीशु से ज्यादा समझते है,
हम पाते हैं की परमेश्वर जिसने हमें बनाया वह

ज्यादातर एक दैवी परिवार की तरह है।
तीन सदस्यः पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा।

हम कौन है? अच्छा, हमने खोजा की हम एक
प्रेमी परमेश्वर के द्वारा निर्माण किए गए हैं।

© Lee McMunn, 2011

हमें निर्माण किया गया कि हमें परमेश्वर की ज़रूरत हो,
और परमेश्वर हमारे साथ एक रिश्ता चाहता है।

और तौभी, हमने खोजा की हम बागी भी हैं।
हम परमेश्वर के जगत इस तरह नहीं रहें

जैसे हमें रहना था, और
तौभी हमने जाना की हालांकि

हम परमेश्वर की अनंत सजा के योग्य है,
हमने कुछ बढ़िया पाया

उस महान छुटकारे के मिशन के बारे में जो पहले
कभी बताया नहीं गया था। कि हमने यह पाया

की सिर्फ दो हज़ार वर्ष पहले
परमेश्वर पिता ने अपने एकलौते पुत्र

को एक सबसे बढ़िया नाटकीय
छुटकारे मिशन पर भेजा।

और यीशु हमें किस चीज़ से बचाने आया?
अच्छा, हाँ, वह हमें जीवन में

थोड़े पर रुकने से बचाने केलिए आया,
परंतु वह हमें अनंत विनाश से

भी बचाने आया। अनन्त दंड जिसके
हम हक्कदार है।

उसने यह कैसे किया? अच्छा, हमने सीखा की
उसने हमारी जगह पर जीने और हमारी

जगह पर सहने से हमें बचाया। याद करें,
"पूरा हुआ,"? उसने वह सब हासिल कर लिया है।

और हम किस लिए बचाए गए हैं? अच्छा, हम
सिर्फ क्षमा पाने के लिए नहीं बचाया गया

और फिर हमें परमेश्वर से दूर चलें जाने को कहा गया।

हम सच्चे और जीवित परमेश्वर से रिश्ता
बनाएँ रखने के लिए बचाया गया है।

हमने यह भी जाना की यह स्वयंचलित
नहीं है। क्षमा मुफ्त है,

© Lee McMunn, 2011

परंतु हमें उसे पाने केलिए व्यक्तिगत
रीति से यीशु के पास आना है

और उस परमेश्वर से संबंध
रखना है जिसने हमें बनाया है।

तो मेरा प्रश्न हैः हम कैसे प्रतिसाद देंगे
उसे जो हमें बताया गया है।

जो हमने साथ साथ सीखा है?
प्रतिसाद देने के लिए आपको यीशु के बारे में

सबकुछ जानने की जरूरत नहीं। आपको पर्याप्त जानकारी चाहिए - अगर आप विश्वास करेंगे उन बातों में

जो यीशु की पहचान और मिशन के बारे
में मैनें बताई है, तब मैं आप से कहूँगा

'हाँ, आप सब कुछ नहीं जानते। परंतु आप पर्याप्त
जानते हैं यीशु के पास आने के लिए आप जैसे भी हैं।

और उसे अपने जीवन का अधिकार देने के लिए।'

आपको मन में शायद एक प्रश्न होगाः
मैं इसे कैसे करता?

मैं कैसे यीशु के साथ व्यक्तिगत
रिश्ते की शुरुवात कर सकता था?

अच्छा, यहा कई सारे तरीकें है, परंतु सबसे बढ़िया
में से एक है परमेश्वर से प्रार्थना करना।

अब, आप शायद सोचेंगे, 'मैं क्या कह सकता हूँ?
मैं किस तरह की प्रार्थना परमेश्वर से कह सकता हूँ

जो मेरी कुछ भावनओं को व्यक्त करेंगी,
कुछ जो मैं सोच रहा हूँ?'

अच्छा, आपके पुस्तक के अंत में एक
प्रार्थना है। मैं उसे पढ़ने जा रहा हूँ।

यह एक मौका है क्षमा माँगने केलिए, धन्यवाद
देने के लिए, और विनती करने के लिए।

मुझे एक बार इसे पढ़ने दें,
और मैं बाद मैं क्या करूँगा,

© Lee McMunn, 2011

मैं उसे दोबारा पढ़ूँगा और
अगर यह प्रार्थना आप सोचते है

आपके कहने के लिए उचित है,
तो क्यों ना आप इसे चुपचाप अपने मन में

परमेश्वर जो स्वर्ग में है उससे कहें, जो सुन रहा है,
और जो इस प्रार्थना का उत्तर देगा?

मुझे पहले इसे पढ़ने दें। यह कहती है,

'पिता, मैं यह जानता हूँ की मुझे आपकी क्षमा की
जरूरत है क्योंकि जिस तरह मैं अपने जीवन को जीया हूँ।

मैं क्षमा माँगता हूँ अपने आप
को मध्य में रखने के लिए

और आपकी दुनिया में इस तरह जीने के लिए जैसे मैं
अधिकारी था। कृपया मुझे क्षमा करें।

मैं धन्यावाद देता हूँ की आपने अपने एकलौते
पुत्र को इस दुनिया में भेजा मेरी जगह में जीने

और मेरी जगह में मरने। धन्यवाद की
यीशु ने उस न्याय का पहले ही अनुभव ले लिया है

जिसका मैं हक्कदार था। अब से लेकर, मैं उसके पीछे
होना चाहता हूँ मेरे उद्धारकर्ता राजा की तरह।

तो कृपया मेरी मदत करें आपकी आत्मा के द्वारा,
दिन ब दिन, वह सब करने के लिए जो यीशु कहता है।'

अब, यह कुछ ऐसा हो सकता है,
की अभी आप यीशु के बारे में पर्याप्त विश्वास करते हैं

व्यक्तिगत रीति से उसे समर्पण करने के लिए।
तो मैं इसे फिर दोबारा पढ़ने जा रहा हूँ,

और अगर यह आप के लिए उचित है,
मैं आपको प्रोत्साहित करुंगा की इसे लेकर चुपचाप

अपने मन में प्रार्थना करें परमेश्वर से जो स्वर्ग
में है, जो सुन रहा है।

पिता, मैं यह जानता हूँ की मुझे
आपको क्षमा की जरूरत है

© Lee McMunn, 2011

जिस तरह मैं अपने जीवन को जीया हूँ।
मैं क्षमा माँगता हूँ स्वयँ को मध्य में रखने केलिए,

और आपकी दुनिया में ऐसे जीने कि मैं ही
अधिकारी था। कृपया मुझे क्षमा करें।

धन्यवाद की आपने अपने एकलौते पुत्र को इस
दुनिया में भेजा मेरी जगह में जीने

और मेरी जगह में मरने। मैं धन्यवाद करता हूँ कि
यीशु ने उस न्याय का पहले ही अनुभव किया

जिसका मैं हक्कदार था। अब से लेकर, मैं उसके पीछे
चलना चाहता हूँ मेरे उद्दारकर्ता/राजा की तरह।

तो कृपया मेरी मदत करें आपकी आत्मा के द्वारा,
दिन ब दिन, वह सब करने के लिए जो यीशु कहता है।

अच्छा, अगर आपने इसे कहा है,
इस क्षण यह एक बढ़िया मौका हो सकता है

किसी और को बताने का। यह बढ़िया होगा कि अपनी
बातचीत को हम जारी रखें अपने टेबलों पर।

अब शायद यह सोचते हों,
'शायद में बढ़ रहा हूँ उसे कहने कि ओर,

परंतु शायद अभी नहीं।' परंतु क्यों ना आप
कुछ समय अपने टेबलों पर बिताए

और देखें की लोग क्या कह रहें हैं?

Identity – Who is God? Who are we?

© Lee McMunn, 2011

All rights reserved. Except as may be permitted by the Copyright Act, no part of this publication may be reproduced in any form or by any means without prior permission from the publisher.

Published by 10Publishing, a division of 10ofThose Limited.

All Hindi scripture quotations are taken from Hindi-O.V. © The Bible Society of India.

10Publishing, a division of 10ofthose.com
Unit 19 Common Bank Industrial Estate, Ackhurst Road, Chorley, PR7 1NH, England.
Email: info@10ofthose.com
Website: www.10ofthose.com